ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

17-08-2026

अगर ब्राह्मण जीवन में संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन की बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हो। कोई विकर्म नहीं हुआ लेकिन व्यर्थ कर्म भी हुआ तो पश्चाताप के बजाए महसूसता की स्टेज होती है। महसूस होता है कि यह रॉंग है, नहीं होना चाहिए.. वह बात कांटे के समान चुभती रहेगी, इसलिए इस व्यर्थ से भी मुक्त बनो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

If you have any impurity or you break one of the code of conduct in this respect in Brahmin life even in your thoughts, then, instead of being seated on the throne, you go into a descending stage. You may not have performed any sinful action, but even if you performed a wasteful action, then, instead of repentance, you will have realisation. You will realise that that was wrong and that it should not have happened and it will prick you like a thorn. Therefore, become free from all waste.